सुरेन्द्र गुप्त 'सीकर'

गीत

गीत

गंगे अहम् त्वाम् वन्दे।
नमामि गंगे! नमामि गंगे।।
हरि-नख निसृत।
शिव-शिख भागीरथ मिस स्थित।।
पथ निर्देशित।।
पथ निर्देशित।
मुक्ति-मार्ग हित।।
स्वार्गारक्षित, अभ्युत्थानम् दे....
तव तटस्थ तट
स्वतः तीर्थमय।
लहर मध्य लय
विलय कीर्तिमय।।
ज्वलित चित्तहित
सरस शीतमय, पाप निदानम् दे....
मोक्ष दायिनी
स्वर्ग वासिनी।
पृथ्वी मंडल
पाप नाशिनी।।
विहरति निर्मल,
जल प्रकाशिनी, अमृतदानम् दे....
देवि! सुरेश्वरि
हे! गंगेश्वरि।
त्रिभुवन तारिणि
हे! परमेश्वरि।।
पुण्य प्रदायिनि
शुचि अमरेश्वरि, चरणं शरणं दे....

गीत

मैं नदी तलुवों के नीचे बह रही।
तुमने मेरे मूल्य को समझा नहीं।।
मैं सदानीरा निरंतर अहर्निश बहती रही।
प्यास तन-मन की सहज संतृप्त मैं करती रही।।
मेरा दोहन, हर समय, हर काल में तुमने किया।
जो भी ढाये कहर तुमने मौन में सहती रही।।
जीवहित में धर्मव्रत का अनुसरण मैं करती रही।
तुमने मेरे कर्म को समझा नहीं।।
सूखते अघरों को मैंने तृप्ति से सिंचित किया।
चिर प्रतीक्षित नयन को आशान्वित, दीपित किया।।
मैं उपेक्षित ही रही नित अहिल्या अभिशाप-सी।
तुमने मुझ पर वर्जनायें उड़ेलीं दूषित किया।।
मौन अन्तर्मन व्यथा में अनवरत दहती रही।
तुमने मेरे मर्म को समझा नहीं।।
मेरे मन के घाव मुखरित हो रहे हैं अब सभी।
सिसकियों के दंश तन को डस रहे हैं अब सभी।।
दी मुझे जग ने असह्य पीड़ा, असीमित वेदना।
आयेगा धन्वंतरी उपचार हित कोई कभी?
अमृत सागर पर प्रदूषण घात मैं सहती रही।
तुमने मेरे दर्द को समझा नहीं।।

नित्य प्रति मेरी शिरायें अब सिकुड़ती जा रहीं।
मेरी पिंडलियां थकी हैं नसें कटती जा रहीं।।
स्व-प्रवाहित शक्तियां बाधित व आहत, क्षीण हैं।
हताशा अरू निराशा के मध्य गलती जा रहीं।।
अमिय रस-द्रावण निरंतर आदि से करती रहीं।
तुमने परखा तो मगर समझा नहीं।।
तुम कदाचित भावनाओं को मेरी समझो जरा।
मेरे जैविक महत को आँको कभी परखो जरा।।
भावी संतति के भविष्य-हित मुझे तुम निरखो जरा।
बिन मेरे कैसा जगत होगा कभी सोचो जरा।।
मैं सँजीवनी हाशिये पर ही सदा रहती रही।
अब तो समझो अब तक मुझे समझा नहीं।।

गीत

लुप्त हो गयी कहां वो तेरी
अविरल, शीतल छाया माँ?
कौन पी गया गंगा जल-सी
तेरी निर्मल काया माँ??
परम्परागत पूजन-अर्चन
को, तुमसे आशीष मिला।
और कछारों को नित्यप्रति
तुमसे ही पीयूष मिला।।
ना जाने कितनी मनौतियों को तूने दुलराया माँ...
तूने ही इतिहास बनाकर
परिवर्तित भूगोल किया।
नावों के माध्यम से दसों
दिशाओं का मुँह खोल दिया।।
तूने ही धरती के संस्कारों को स्वर्ग पठाया माँ...
खुदी हुई है तेरी गाथा
रेतीली चट्टानों पर।
छपी हुई हैं जलप्लावन-
वलियाँ तब तट बन्धनों पर।।
ढूँढ़ रहे तपते रेतीकण अब तेरी जल माया माँ..

कैसा यह वैश्विक विकास है
कैसी है यह नादानी?
मरा हुआ है जानें क्यों
लोगों की आँखों का पानी??
व्यर्थ करोड़ों हुए अभी तक पर परिणाम न आया माँ...
है विनम्र विनती धरती-
पुत्रो! अब तो कुछ शर्म करो।
नदी बचे इसके संरक्षण-
हित तो कोई कर्म करो।।
तेरी पीड़ा को जन-जन तक 'सीकर' ने पहुंचाया माँ...

गीत

ओ नदी! तू रेत में क्यों छुप गयी
तेरी शीतल छाँव को क्या हो गया
तेरी लहरें लुप्त आखिर क्यों हुईं
तेरी चंचल धार को क्या हो गया
तेरे अल्हड़पन को क्यों दीमक लगा
क्यों तेरा अस्तित्व निर्मल खो गया
दलदले कीचड़ में क्यों रच-बस गयी
तेरी द्रुत गति, चालकों क्या हो गया
सब चरिन्दे और परिन्दे हैं विकल
रूठ बैठी है तू आखिरकार क्यों
नित्य तट पर आ रहे आशान्वित
प्राणियों को कर दिया लाचार क्यों
कौन-से जंजाल में तू फँस गयी
धमनियों को तेरी यह क्या हो गया
क्या कहूँ, कैसे कहूँ, किससे कहूँ?
दोष दूँ, आरोप किस-किस पर मढ़ूँ
इतना दोहन और शोषण हो चुका
अति प्रदूषित मैं भला किससे लड़ूँ
शर्म से मैं ही धरा में धँस गयी
खेदयुत तन सूख काँटा हो गया
अब पुनः मुझको धरा पर चाहो यदि।
महत्त्व समझो मेरा, दो सम्मान यदि।।
मेरी गरिमामयी निरंतर स्वच्छता।
रख सको, रखो प्रदूषण-मुक्त यदि।।
गर्भ में मैं धरती माँ के बस गयी।
आऊँ यदि उद्धार का लो प्रण नया।।

गीत

जल ही जीवन, जीवन ही जल,
उक्ति ये बहुत पुरानी है।
रक्त में भी नब्बे प्रतिशत से,
ज्यादा मिश्रित पानी है।।

बूँद-बूँद जल अमिय सरिस, संजीवनी सम सुख देता है।
जल-अभाव प्यासों के प्राणों की बलि भी ले लेता है।।
जल अमूल्य निधि, जीवन दाता, कहता यह विज्ञानी है...
नैसर्गिक उपहार है जल ही, हरित क्रान्ति सिंगार है जल।
पंचतत्व परिवार है जल ही, सृष्टिजन्य आधार है जल।।
जो इस तथ्य को समझ न पाये, वह अतिशय अज्ञानी है ...
मितव्ययिता से सदुपयोग हो, दुरूपयोग ना हो जल का।
ध्यान रहे भावी पीढ़ी के जीवन अरू सुखमय कल का।।
अब भी यदि हम ना चेते तो, यह अक्षम्य नादानी है...
इतने जल विज्ञापन अरू, सरकारी चेतावनियों पर।
नहीं रेंगती जूँ जिन पर, ऐसे भी लोग हैं धरती पर।।
विनती उनसे 'सीकर' की जल की हर बूँद बचानी है ...

गीत

बदरा आयो बरसो जोर
बदरा आयो बरसो जोर।
आग लगी सारी धरती पर
इत-उत चारों ओर।।
लुप्त हुई बागों की खुशबू, सूखी खेतों की हरियाली।
सूखे ताल, तलैया, पोखर, कोपल हो गयी पीली-काली।।
अशावरी दृष्टि से ताकें, पशु-पक्षी नित तुम्हरी ओर ...
मूल तत्व है सृष्टि का पानी, बिन पानी जीवन बेगानी।
पंचभूत की एक इकाई, आवश्यक कहते हैं ज्ञानी।।
पानीदारी ही जीवन का गहना, इसका कोई ओर न छोर ...
रमता योगी, बहता पानी, पानी की है अकथ कहानी।
जल बिन जीवन निरा असंभव, फिर भी हम करते नादानी।।
घूम-घूम कर ऋषि-प्रसाद-सा, बाँट रहे तुम जल चहुँ ओर...
जल ही जीवन है सोचो! बिन जल के जीवन हो कैसा?
बूँद-बूँद जल अति अमूल्य निधि, क्या हमने सोचा ऐसा??
अगर न चेते त्राहि मचेगी धरती पर इक दिन घनघोर...

संपर्क करें:
सुरेन्द्र गुप्त 'सीकर'
43, नौबस्ता, हमीरपुर रोड
कानपुर-208021 (उ.प्र.)
मो. 09451287368